

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, द थियोलॉजी ऑफ़ ल्यूक-एक्ट्स सेशन 6, डैरेल बॉक थियोलॉजी, द न्यू कम्युनिटी

यह ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं। यह सत्र 6 है, डैरेल बॉक का धर्मशास्त्र, द न्यू कम्युनिटी।

हम लुकान धर्मशास्त्र पर एक साथ अपना अध्ययन जारी रखते हैं, ल्यूक के सुसमाचार के साथ काम करते हुए, बाद के व्याख्यानों में, प्रेरितों के कार्य पर चर्चा करते हैं।

हमें प्रार्थना करनी चाहिए। पिता, अपना पवित्र मुँह खोलने और पुराने समय के भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों के माध्यम से अपना वचन बताने के लिए धन्यवाद। हम ल्यूक और उसके योगदान के लिए आपको धन्यवाद देते हैं। हमारे दिमागों को रोशन करो, हमारे दिलों को प्रोत्साहित करो, हमारी इच्छाओं को झुकाओ। आपकी इच्छा पूरी करने के लिए, हम अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करते हैं। तथास्तु।

हम ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र में डैरेल बॉक के परिचय को समाप्त कर रहे हैं, और वह नए समुदाय, चर्च के बारे में बात कर रहे हैं, और एक उपशीर्षक भगवान की योजना के खिलाफ दबाव है।

विरोध के लिए यीशु के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। यह अपरिहार्य है कि यीशु के लिए प्रत्येक निर्णय, यीशु के लिए प्रत्येक निर्णय के साथ, विरोध भी आता है। विभाजन के बारे में टिप्पणियाँ पहले ही आ जाती हैं, लूका 2:34, 35, और विभाजन संबंधी टिप्पणियाँ पूरे सुसमाचार में पाई जाती हैं। लूका 8: 14, 15, लूका 9:21-23, लूका 9:61-62, लूका 12:4-9, और 22-34। लूका 22:35-38। इसलिए, मैं उन आयतों को दोहरा रहा हूँ: लूका 8:14-15, लूका 9:21-23, साथ ही 61-62, लूका 12:4-9, 22-34 और लूका 22:35-38।

पहले से ही अध्याय 2 में, शिमोन कहता है, देखो यह बच्चा, लूका 2:34 मरियम से कहता है, देखो यह बच्चा, शिशु यीशु का जिक्र करते हुए, इस्राएल में बहुतों के पतन और उत्थान के लिए नियुक्त किया गया है। पतन और उत्थान, इस्राएल में बहुतों का न्याय और आशीर्वाद, तथा विरोध किये जाने वाले चिन्ह के लिए।

इसलिए, जन्म कथाओं में पहले से ही हमारे पास यह धारणा है कि मसीह विभाजन लाने जा रहा है। हम इसे पूरे सुसमाचार में इन संदर्भों में पाते हैं, जिन्हें मैंने दो बार पढ़ा है और यह पर्याप्त है। यीशु की मनुष्य के पुत्र के पीड़ित होने, अस्वीकार किए जाने और मारे जाने की भविष्यवाणियों में विभाजन है।

9:22 में प्राचीन, मुख्य याजक और शास्त्री अपने मसीहा, परमेश्वर के पुत्र के विरुद्ध हैं। शिष्य सुसमाचार में साहसपूर्वक प्रतिक्रिया करने से पीछे हटते हैं, जैसा कि पतरस का उदाहरण दर्शाता है। लेकिन प्रेरितों के काम में आत्मा, पवित्र आत्मा की उपस्थिति उन्हें साहसी बनाती है।

दृढ़ता और वफ़ादारी एक शिष्य के लक्षण हैं। दृढ़ता के लिए लूका के उपदेश उसके उद्देश्य और सेटिंग का एक तत्व प्रकट करते हैं। समुदाय के भीतर और उसके बारे में इस संघर्ष के दबाव ने थियोफिलस और अन्य सभी पाठकों को आश्चस्त होने की आवश्यकता को जन्म दिया।

यह परेशान शिष्य नए आंदोलन का हिस्सा है, और उसे, किसी भी अन्य गैर-यहूदी की तरह, यहाँ रहने का अधिकार है। उसे यह जानने की ज़रूरत है कि परमेश्वर की योजना और आशीर्वाद इस नए समुदाय में काम कर रहे हैं। लेकिन अगर वह यहाँ का हिस्सा है, यानी थियोफिलस, तो नए समुदाय के सदस्य के रूप में उसका क्या आह्वान है? यहूदी वादे, यहूदी ईसाइयों और यहूदियों से उसका क्या संबंध है? नए समुदाय ने अलग होने का चुनाव नहीं किया।

इसने खुद को इस्राएल की आशा के रूप में प्रस्तुत किया, लेकिन इसे अलग होने के लिए मजबूर किया गया। अपनी विशिष्टता में, यह परमेश्वर के वचन का एक प्रबंधक बन गया, प्रेरितों के काम 6:7। अब इसमें परमेश्वर के सच्चे लोग रहते हैं, कुलपिताओं और दाऊद को दिए गए वादों का भंडार है, प्रेरितों के काम 13:21-39।

कुछ विशेषताएँ इसे अलग भी बनाती हैं। आत्मा की नवीनता इस अंतर के लिए जिम्मेदार है और यह सक्षमता का स्रोत है जिसके द्वारा यीशु अपनी उपस्थिति व्यक्त करते हैं, हालाँकि वे शारीरिक रूप से अनुपस्थित हैं, प्रेरितों के काम 2:14-40, प्रेरितों के काम 11:15। पतरस यरूशलेम में कुरनेलियुस के घर में अपने अनुभव के बारे में कलीसिया को बता रहा है।

जैसे ही मैंने इन गैरयहूदियों से बात करना शुरू किया, उसका मतलब था कि पवित्र आत्मा उन पर भी उतरी, ठीक वैसे ही जैसे शुरुआत में हम पर उतरी थी। परमेश्वर ने आत्मा की उपस्थिति के भौतिक प्रकटीकरण को ठीक उसी तरह दिया, ताकि पतरस और अन्य यहूदी मसीहियों को भरोसा दिलाया जा सके कि प्रभु गैरयहूदी विश्वासियों को इस नए समुदाय, चर्च में शामिल करके कुछ नया और अद्भुत कर रहे हैं। तदनुसार, नए समुदाय का एक अलग चरित्र होना चाहिए, जो नेतृत्व की वर्तमान धर्मनिष्ठता या वर्तमान सांस्कृतिक मानकों, लूका 6:27-36, 12:1, 14:1-14, और 22:24-27 से अलग हो।

नए समुदाय के अंतर्गत एक अन्य उपशीर्षक आस्था और निर्भरता है। ईश्वर के प्रति पुनर्भिविन्यास की मौलिक भूमिका को प्रतिक्रिया के चित्रों के अंतर्गत पहले ही निपटाया जा चुका है। ऐसा बुनियादी विश्वास न केवल ईश्वर के साथ चलने की शुरुआत करता है, बल्कि उसे कायम भी रखता है।

प्रारंभिक बचत विश्वास, ईसाई जीवन में चल रहा विश्वास। लूका 5:31-32, लूका 15:17-21, लूका 12:22-23। लूका 5:31 यीशु ने उन को उत्तर दिया, जो भले चंगे हैं, उन्हें वैद्य की आवश्यकता

नहीं, परन्तु बीमारों के लिये मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूँ।

विश्वास और पश्चात्ताप एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। पश्चात्ताप में पाप से मुड़ना और मसीह की ओर मुड़ना शामिल है, जैसा कि सुसमाचार में बताया गया है। यह प्रारंभिक विश्वास का एक उदाहरण होगा, अध्याय 12:22-32, निरंतर विश्वास की बात करता है, जहाँ यीशु कहते हैं, चिंता मत करो, हे मेरे अच्छे, भगवान पक्षियों को खिलाते हैं और सोसन को कपड़े पहनाते हैं, निश्चित रूप से वह तुम्हारा ध्यान रखेगा, क्योंकि परमेश्वर का तर्क छोटे प्राणियों की भी चिंता करता है, निश्चय ही वह तुम्हारा भी ध्यान रखता है जो परमेश्वर की छवि में बनाए गए हो।

आप घास और पक्षियों से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं, और परमेश्वर आपका भी ख्याल रखेगा। यानी, चिंता मत करो, बल्कि विश्वास से जियो। इसके बजाय, लूका 12:31, दुनिया की सारी जातियाँ इन चीज़ों की तलाश में रहती हैं।

पद 30, बिन बचाये हुए लोग उनकी खोज में रहते हैं, और तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें उनकी आवश्यकता है। 31 परन्तु उसके राज्य की खोज करो, और ये वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएंगी। अर्थात्, जो लोग प्रभु को जानते हैं उन्हें विश्वास के साथ जीना है, यह विश्वास करते हुए कि उनके स्वर्गीय पिता, जो गौरियों की देखभाल करते हैं और जो मैदान की लिली की देखभाल करते हैं, अपने बच्चों की देखभाल करेंगे, जो उनके आध्यात्मिक परिवार के सदस्य हैं, परमेश्वर के नए नियम के लोग।

संपूर्ण प्रतिबद्धता, एक अन्य उपशीर्षक, शिष्यों को पूरी तरह से भगवान के साथ चलने पर ध्यान केंद्रित करना है। कोई उच्च प्राथमिकताएँ नहीं होनी चाहिए। लूका 9:23, लूका 9:57-62, लूका 14:25-35।

यदि कोई मेरे पास आए और अपने माता-पिता, पत्नी, बाल-बच्चे, भाई-बहिनों, वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। क्या यीशु वास्तव में किसी के परिवार से शाब्दिक घृणा करना सिखा रहे हैं? आइए बस पिता और माता को चुनें। नहीं, पाँचवीं आज्ञा है अपने पिता और माता का आदर करना।

वह दस आज्ञाओं का खंडन नहीं कर रहा है। बल्कि, वह कह रहा है, मेरे प्रति आपकी भक्ति और प्रेम की तुलना में, आपके प्यारे परिवार के सदस्यों के प्रति भी आपका प्रेम और भक्ति तुलनात्मक रूप से घृणा प्रतीत होती है। दूसरे शब्दों में, वह पूर्ण प्रतिबद्धता की मांग करता है।

इसलिए, लूका 14:33, तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता। क्या वह वास्तव में सब कुछ त्यागने की शिक्षा दे रहा है? नहीं। एक बार फिर, यह उस बात की कट्टरपंथी भाषा है जिसे पूर्वी विरोधाभास कहा गया है; परमेश्वर को इस हद तक प्रथम स्थान मिलना चाहिए कि हमारे पास जो कुछ भी है, उसकी तुलना में वह कुछ भी नहीं है।

इस फोकस के लिए दैनिक समर्पण और इस बात पर चिंतन की आवश्यकता होती है कि क्या मांग की जाती है। इस प्रतिबद्धता का कारण यह है कि एक शिष्य का मार्ग आसान नहीं है। इसमें क्रॉस-बेयरिंग शामिल है, जो एक दैनिक प्रयास है।

अपना क्रूस उठाओ और मेरे पीछे आओ। चेलों ने जब वे शब्द सुने, तो वे समझ गए। और यदि उन्होंने कभी किसी को अपने क्रॉस की बीम उठाए हुए देखा, तो वे जानते थे कि वह कहाँ जा रहा था।

उसे भयानक मौत मरने के लिए सूली पर चढ़ाया जाने वाला था। तो, यीशु, क्या उसका मतलब यह है कि हम सभी को शहादत मांगनी चाहिए? नहीं, यह पूर्ण प्रतिबद्धता की बिल्कुल यही धारणा है। उसका मतलब है कि हमें उसके लिए अपनी जान दे देनी चाहिए।

हमें उसे पहले स्थान पर इस तरह रखना चाहिए कि हम स्वयं के लिए मर जाएं, कि हम अपने जीवन को उसके अधीन मानें। और हां, अगर इसमें अपनी जान देना शामिल होगा, तो यह उचित होगा, लेकिन आमतौर पर ऐसा नहीं होता है। हम मृत्यु में अपना जीवन देते हैं, लेकिन इसमें उसके प्रति प्रतिबद्धता में अपना जीवन देना शामिल है जिसने हमसे प्यार किया और हमारे लिए खुद को दे दिया।

एक अन्य उपशीर्षक है: खोए हुए के प्रति प्रतिबद्धता। समुदाय के पास खोए हुए लोगों के लिए एक मिशन है। अधिनियम इस मिशन की प्रारंभिक उपलब्धियों का विवरण देता है, लेकिन ल्यूक का सुसमाचार आह्वान को स्पष्ट करता है।

ल्यूक 24, यह इस अध्ययन में कितना महत्वपूर्ण रहा है। लूका 24:47. यह वही है जो यीशु उन लोगों के कानों में गूंजता हुआ छोड़ते हैं जो ल्यूक का सुसमाचार पढ़ते और सुनते हैं।

उन्होंने शिष्यों के दिमाग को धर्मग्रंथों को समझने के लिए खोल दिया। और यही लिखा है, कि मसीह दुःख उठाए, और तीसरे दिन मरे हुएओं में से जी उठे। ल्यूक 24:46, और फिर श्लोक 47, और यरूशलेम से शुरू करके सभी राष्ट्रों में उसके नाम पर पश्चाताप और पापों की क्षमा की घोषणा की जानी चाहिए।

तुम इन बातों के गवाह हो, और देखो, मैं अपने पिता का वचन तुम पर पूरा करता हूँ; परन्तु जब तक तुम ऊपर से सामर्थ्य न पहिन लो, तब तक नगर में ही रहो। परमेश्वर के नए लोग खोए हुए लोगों के प्रति प्रतिबद्धता साझा करते हैं। वे इसे स्वयं फसल के स्वामी के साथ साझा करते हैं।

जैसा कि हमने अभी लूका 24 में देखा, सुसमाचार आह्वान का वर्णन करता है। इसके अलावा, यह ल्यूक के सुसमाचार पर जोर देता है। लूका 5:31, 32.

लूका 19:10. मनुष्य का पुत्र, जो खो गया है उसे ढूँढ़ने और बचाने आया है, जिसमें जक्कई जैसे महसूल लेने वाले भी शामिल हैं। जक्कईस।

ल्यूक का सुसमाचार न केवल खोए हुए लोगों के पास जाने के आह्वान को साझा करता है, न केवल मोक्ष पर जोर देता है, बल्कि मिशन का ध्यान कर संग्रहकर्ताओं और पापियों पर भी केंद्रित करता है। ल्यूक 15 में तीन दृष्टांत हैं: खोई हुई भेड़, खोया हुआ सिक्का, और खोया हुआ बेटा। यह वास्तव में मिशन के फोकस को दर्शाता है।

सौ में से एक भेड़ परमेश्वर के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। इसलिए, चरवाहा 99 को छोड़कर एक को वापस ले आता है। 10 में से एक सिक्का उस महिला के लिए महत्वपूर्ण था जिसने अपना फर्श तब तक साफ़ किया जब तक उसे वह नहीं मिल गया।

दो में से एक बेटा, संख्या में कमी को नोटिस करता है। सौ भेड़ों में से एक, दस सिक्कों में से एक, दो बेटों में से एक। यह संख्या में कमी पर जोर देता है, महत्व पर जोर देता है।

बेटा, एक बेटा, परमेश्वर के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसीलिए स्वर्ग में खोई हुई चीजों या खोए हुए लोगों के मिलने पर खुशी होती है। चर्च एक आंतरिक रूप से निर्देशित निकाय नहीं है, बल्कि एक बाहरी रूप से पहुँचने वाला समूह है।

प्रेरितों के कामों में गवाही और साक्ष्य का विषय भी इस बात को रेखांकित करता है। एक और उपशीर्षक है परमेश्वर और अपने पड़ोसी के लिए प्रेम। परमेश्वर के प्रति समर्पण अपने आप को आश्रित प्रार्थना में व्यक्त करता है, लूका 11:1 से 13 तक।

यीशु के प्रति समर्पण को मरियम द्वारा यीशु के चरणों में बैठकर उनकी शिक्षाओं और उपस्थिति को आत्मसात करने के लिए सही विकल्प के रूप में दिखाया गया है, लूका 10:38 से 42। मार्था व्यस्त थी और सेवा कर रही थी और कुछ भी गलत नहीं कर रही थी। यह प्राथमिकताओं का मामला था।

यीशु के प्रति प्रेम सबसे पहले आता है। अपने पड़ोसी की देखभाल करना भी ऐसी ही भक्ति की अभिव्यक्ति है। और यह, बेशक, अच्छे सामरी का दृष्टांत है, लूका 10:25 से 37 तक।

दृष्टांत के अंत में यीशु कहते हैं कि इन तीनों में से कौन है, एक पुजारी, एक लेवी और सामरी, इन तीनों में से कौन उस आदमी का पड़ोसी साबित हुआ जो लुटेरों के बीच गिर गया था? यीशु ने वकील से पूछा, और उसने उत्तर दिया, जिसने उस पर दया की। और यीशु ने उससे कहा, तुम भी जाओ और वैसा ही करो। यह कोई संयोग नहीं है कि सामरी दृष्टांत का नायक है और पुजारी और लेवी विरोधी नायक थे।

उनके पास अपने समाज में बहुत ऊँचा दर्जा और बहुत अधिक शक्ति थी। यहूदियों द्वारा अच्छे सामरी लोगों का तिरस्कार किया जाता था, लेकिन यह सामरी अपने पड़ोसी से प्यार करता था, उसने अपने पड़ोसी की देखभाल करने के लिए अपने संसाधन दे दिए, मदद के लिए खुद को आगे बढ़ाया, और यहां तक कि उसकी देखभाल, कमरे और देखभाल के लिए पैसे भी दिए। सामरी अपने रास्ते पर चलता रहा। यह पड़ोसी बनने, अपने पड़ोसी के प्रति अत्यधिक प्रेम दिखाने को दर्शाता है।

इससे जरूरतमंदों के लिए पड़ोसी साबित होने का पता चला। वास्तव में, हर किसी का पड़ोसी बनने के आह्वान पर जोर दिया जाता है। ऐसी देखभाल और करुणा में नस्ल, लिंग या वर्ग की कोई सीमा नहीं होती, जैसा कि यीशु के स्वयं के मंत्रालय ने दिखाया।

जैसा कि हम देखेंगे जब हम ल्यूक के सुसमाचार पर जोएल ग्रीन के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को देखेंगे, तो ऐसी शिक्षा प्रति-सांस्कृतिक थी, यहाँ तक कि कट्टरपंथी भी। और यह एक संस्कृति में ईश्वर की असीम कृपा का प्रमाण है; यह नहीं कहा जा रहा है कि भगवान ने पहले कोई कृपा नहीं दिखाई थी, लेकिन ग्रीको-रोमन संस्कृति में जिसमें न केवल कोई कृपा थी, बल्कि अनुग्रह के लिए कोई श्रेणी भी नहीं थी, देने की धारणा की कोई समझ नहीं थी, बदले में कुछ भी उम्मीद नहीं थी। यह वास्तव में संरक्षक-ग्राहक संबंधों के सर्वव्यापी जाल के प्रभुत्व के लिए पूरी तरह से विदेशी था।

प्रार्थना। प्रार्थना को उपदेश और उदाहरण द्वारा नोट किया जाता है। लूका 11:1-13.

ल्यूक 18 :1-8 और 9-14. लूका 22:40. यीशु ने न केवल एक आदर्श प्रार्थना सिखाई और अपने शिष्यों को प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया, बल्कि जब वह गेथसमेन आए, तो उन्होंने ल्यूक 22:40 में कहा, प्रार्थना करो कि तुम प्रलोभन में न पड़ो।

और वह उनके पास से लगभग एक कदम दूर हट गया, और घुटने टेककर प्रार्थना करने लगा; हे पिता, यदि तू चाहे, तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा दे। यह परमेश्वर के क्रोध का प्याला है, पीड़ा का प्याला है, और परमेश्वर का क्रोध है। फिर भी मेरी नहीं, तेरी ही इच्छा पूरी हो।

यीशु ने जो सिखाया उसे जीया। प्रार्थना मांगती नहीं। यह अनुरोध करता है। विनम्रतापूर्वक ईश्वर की दया और इच्छा पर भरोसा करते हुए, यह मसीह की वापसी और प्रभु यीशु की पूर्णता की ओर देखता है।

यह विश्राम करता है, प्रार्थना ईश्वर की देखभाल और बुनियादी जरूरतों के प्रावधान में निहित है। यह यह भी मानता है कि क्षमा मांगते समय व्यक्ति को क्षमा करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। एक और शीर्षक, दृढ़ता और पीड़ा, भगवान के नए लोगों के तहत एक और उपशीर्षक।

और दृढ़ता से संबंधित कई ग्रंथों का हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं। लूका 8:13-15, 9:23, 18:8, 21:19. ल्यूक 8:13-15, 9:23, 18:8, और 21:19.

एक्ट्स में चर्च अक्सर ऐसी दृढ़ता का उदाहरण देता है। अधिनियम 4:23-31. शिष्यों का यह रवैया धैर्य और अपेक्षा से संबंधित है।

एक अन्य उपशीर्षक है, "सतर्कता, धैर्य, निर्भीकता।" चेलों को परमेश्वर से डरना चाहिए, लोगों से नहीं।" लूका 12:1-12.

वे मानते हैं कि प्रभु वापस आएंगे और वे उनके प्रति ज़िम्मेदार हैं। लूका 12:35-48, 19:11-27, 18:8. लूका 12:35-48, 19:11-27, और 18:8.

वे वचन पर टिके रहते हैं, और फल लाते हैं। लूका 8:15. यहीं पर युगांतशास्त्र ल्यूक में अपना प्रभाव डालता है।

यीशु वर्तमान और भविष्य दोनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जो वादे अधूरे रह गए वो आएंगे। लूका 17:22-37, लूका 21:5-38.

17:22-37, 21:5-38. 70 ई. में आए येरूशलम के फैसले को अंतिम फैसले की गारंटी और तस्वीर के तौर पर देखा जाता है. ल्यूक दोनों की भविष्यवाणी करता है और येरूशलेम और उसके मंदिर का विनाश एक अग्रदूत है।

यह बुराई के अंतिम विनाश और पापियों पर ईश्वर के अंतिम न्याय का संकेत है। यीशु की वापसी एक भयावह अवधि होगी जिसमें अविश्वासी मानव जाति का गंभीर रूप से न्याय किया जाएगा, और विश्वासियों को उन लोगों के हाथों कष्ट सहना पड़ेगा जो विश्वास नहीं करते हैं। ल्यूक इस बात पर जोर देते हैं कि वापसी की वास्तविकता और इसके साथ आने वाली जवाबदेही के लिए आवश्यक है कि शिष्य वफादार हों और सभी लोग अच्छी खबर पर प्रतिक्रिया दें।

प्रेरितों के काम में, ल्यूक ध्यान देगा कि यीशु, उद्धारण, जीवित और मृत लोगों का न्यायाधीश है। अधिनियम 10 :42. अधिनियम 17:31.

पिता तो जज है ही, बेटा भी जज है। पतरस प्रेरितों के काम 10:42 में गवाही देता है, परमेश्वर ने हमें लोगों को उपदेश देने और गवाही देने की आज्ञा दी कि वह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवितों और मृतकों का न्यायी नियुक्त किया है। सब भविष्यद्वक्ता उसकी गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करता है, उसे उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलती है।

अधिनियम 17:31. परमेश्वर ने एक दिन निश्चित किया है जिस दिन वह जगत का न्याय करेगा। मैं पॉल बोल रहा हूँ.

वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा जिसे उस ने नियुक्त किया है, और उस ने उसे मरे हुए में से जिलाकर सब को इस बात का आश्वासन दिया है। यह वर्तमान में पूर्णता की भविष्यसूचक धारणा है, उपस्थिति में भविष्य की पूर्ति की गारंटी के रूप में। जैसा कि भगवान दिखाते हैं, वह अब परिणामों में काम करने में सक्षम है जिसे भविष्य में अपने वादों को पूरा करने में सक्षम होने की गारंटी के रूप में देखा जा सकता है, जिसे अब नहीं देखा जा सकता है।

अध्याय 21 में युगांतशास्त्रीय प्रवचन में ल्यूक यह स्पष्ट करता है कि वापसी से पहले कुछ समय है। लूका 21:5 से 20। वापसी का समय अज्ञात है, परन्तु जब वह आयेगा तो शीघ्र आ जायेगा।

ल्यूक 21. मैंने इसे अभी तक नहीं पढ़ा है। मार्क के पास अपने सुसमाचार के अंत में युगांतशास्त्रीय प्रवचन है।

मैथ्यू अध्याय 24 और 25 में। ल्यूक में, यह अध्याय 21 में होता है। 21:5 से शुरू होता है। और जब कुछ लोग मन्दिर के विषय में कह रहे थे, कि वह किस प्रकार उत्तम पत्थरों और भेंटों से सजाया गया है, तो यीशु ने कहा, इन वस्तुओं के विषय में जो तुम देखते हो, वे दिन आएंगे, कि यहां एक पत्थर पर दूसरा पत्थर भी न छोड़ा जाएगा, जो फेंका न जाए। नीचे।

और उन्होंने उस से पूछा, हे गुरु, ये बातें कब होंगी? और जब ये बातें घटने पर होंगी तो क्या चिन्ह होगा? और उस ने कहा, सावधान रहो, कि तुम भटक न जाओ। क्योंकि बहुत से लोग मेरे नाम से आकर कहेंगे, मैं वही हूं, और समय आ गया है। उनके पीछे मत जाओ।

और जब तुम लड़ाइयों और उपद्रवों की चर्चा सुनो, तो घबरा न जाना, क्योंकि इन बातों का पहिले तो घटित होना अवश्य है, परन्तु अन्त तुरन्त न होगा। तब उस ने उन से कहा, अन्यजातियां एक दूसरे पर चढ़ाई करेंगी। राष्ट्र राष्ट्र पर, राज्य राज्य पर चढ़ेगा।

बड़े-बड़े भूकंप आएंगे, जगह-जगह अकाल और महामारी फैलेगी, और स्वर्ग से भयानक संकेत और भयानक घटनाएँ होंगी। लेकिन इन सब से पहले, वे तुम्हें पकड़ेंगे और सताएँगे, तुम्हें सभाओं और जेलों में ले जाएँगे, और मेरे नाम के कारण तुम्हें राजाओं और राज्यपालों के सामने पेश करेंगे। यह तुम्हारे लिए गवाही देने का अवसर होगा।

इसलिये अपने मन में ठान रखो कि पहिले से उत्तर देने की चिन्ता न करना। क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूंगा, कि तुम्हारे सब विरोधी साम्हने खड़े न हो सकेंगे, और न खण्डन कर सकेंगे। यहां तक कि माता-पिता, भाई, कुटुम्बी, मित्र भी तुम्हें पकड़वा देंगे।

और तुम में से कुछ लोग मार डाले जाएंगे। मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से घृणा करेंगे, परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल भी बाँका न होगा। अपने धीरज से तुम अपने प्राण बचाओगे।

परन्तु जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है। तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं, और जो नगर के भीतर हों वे बाहर निकल जाएं, और जो गांव में हों वे उस में न जाएं। क्योंकि ये पलटा लेने के दिन हैं, जिस में लिखी हुई बातें पूरी होंगी।

उन दिनों में गर्भवती महिलाओं और दूध पिलाने वाली महिलाओं के लिए अफसोस की बात है, क्योंकि पृथ्वी पर बड़ा संकट होगा और इस लोगों के खिलाफ क्रोध होगा। वे तलवार की धार से मारे जाएँगे और सभी राष्ट्रों में बंदी बनाकर ले जाए जाएँगे, और यरूशलेम को अन्यजातियों द्वारा तब तक रौंदा जाएगा जब तक कि अन्यजातियों का समय पूरा न हो जाए।

यहाँ, यीशु यरूशलेम के विनाश की भविष्यवाणी करते हैं।

और सूर्य और चंद्रमा और तारों और पृथ्वी पर चिन्ह दिखाई देंगे, और राष्ट्रों को संकट और समुद्र और लहरों के गरजने से घबराहट होगी। लोग भय और भविष्य की आशंका से बेहोश हो जाएंगे। क्योंकि आकाश की शक्तियां हिल जाएंगी, और वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादल में आते देखेंगे।

अब जब ये बातें होने लगे, तो सीधे होकर सिर ऊपर उठाना, क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा। फिर उस ने उस से एक दृष्टान्त कहा, कि अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों को देखो। जब उन में पत्ते निकल आते हैं, तो तुम स्वयं देख लेते हो, और जान लेते हो कि ग्रीष्म ऋतु निकट आ गई है।

सो जब तुम ये बातें होते देखो, तो जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है। मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब न हो लें, तब तक यह पीढ़ी न जाती रहेगी। आकाश और पृथ्वी मिट जाएंगे, परन्तु मेरी बातें न मिटेंगी।

परन्तु सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे मन व्यभिचार और मतवालेपन और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो जाएँ। और वे तुम पर फन्दे की नाई अचानक आ पड़ें। क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहनेवालों पर इसी प्रकार आ पड़ेगा।

परन्तु जागते रहो, और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचकर मनुष्य के पुत्र के साम्हने खड़े होने की शक्ति पाओ। और वह प्रतिदिन मन्दिर में उपदेश करता था, परन्तु रात को निकलकर जैतून नाम पहाड़ पर रात बिताता था। और भोर को सब लोग उसकी सुनने के लिये मन्दिर में उसके पास आते थे।

लूका 21 में दिया गया वह युगांतशास्त्रीय प्रवचन उचित रूप से प्रसिद्ध है। अधिक समस्या यह है कि लूका कितनी जल्दी वापसी की आशा करता है। कुछ परीक्षण उच्च स्तर की तात्कालिकता का सुझाव देते हैं।

लूका 18:8, लूका 21:32, जिसे हमने अभी पढ़ा। जब तुम इन बातों को घटित होते देखो, तो जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है। लेकिन ऐसे पाठों को यह सुझाव देने के लिए पढ़ा जा सकता है कि वापसी दिव्य कैलेंडर, ल्यूक 18:8, अधिनियम 3:18-21 में अगली है, या कि वापसी, जब यह आएगी, जल्दी आएगी और जल्दी से हल हो जाएगी।

लूका 17:24-37, लूका 21:25-36. ल्यूक की स्थिति वापसी के समय के बारे में अनिश्चितता व्यक्त करती है और फिर भी इसके किसी भी क्षण आने की संभावना व्यक्त करती है। मुझे बॉक बुद्धिमान लगता है। हमारे पास आसन्न कहावतें हैं।

यीशु के लौटने के समय के संबंध में सुसमाचार में हमारे पास तीन प्रकार की बातें हैं। आसन्न कहावतें हमें तैयार रहने के लिए कहती हैं, कि यह किसी भी समय हो सकता है।

अंतराल कहावतें हमें बताती हैं कि यीशु के दोबारा आने से पहले कुछ चीजें अवश्य घटित होनी चाहिए।

और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी अज्ञानतापूर्ण बातें हमें बताती हैं कि हम दिन या घंटे को नहीं जानते हैं। इसलिए, आसन्न मार्ग भगवान के लोगों को सतर्क रखने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। अंतराल मार्ग, हमें बताते हैं कि उसके वापस आने से पहले कुछ चीजें होनी चाहिए, हमें

बताते हैं कि हमें सफेद वस्त्र पहनकर पहाड़ों पर नहीं जाना चाहिए और जीवन और संस्कृति को त्यागना चाहिए।

नहीं, हम योजना बनाते हैं, हम काम करते हैं, और हम प्रभु के वापस आने की प्रतीक्षा करते हैं। लेकिन सबसे बढ़कर, अज्ञानता के अंश हमें मूर्खतापूर्ण तरीके से उन चीजों के बारे में तिथियाँ निर्धारित करने से रोकते हैं जिनके बारे में हम वास्तव में नहीं जानते। 1800 के दशक से ही चर्च के इतिहास में लोगों द्वारा ठीक वैसा ही करने का दुखद इतिहास और रिकॉर्ड भरा पड़ा है, जब लोग पहले से ही यह बकवास कर रहे थे।

लूका ने व्यक्तिगत परलोक विद्या की वास्तविकता को कॉर्पोरेट परलोक विद्या से अलग बताते हुए इसे अद्वितीय रूप से नोट किया है। यह मृत्यु के बाद यीशु की उपस्थिति में होने की जागरूकता है। दो अद्वितीय ग्रंथों में, लूका ने मृत्यु को स्वर्ग में संक्रमण के रूप में चित्रित किया है।

लूका 23:42 और 43. मरते हुए पश्चातापी चोर से यीशु कहते हैं, मैं तुमसे सच कहता हूँ, आज ही तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे। अल्पविराम को हटाने और इसे भविष्य के बारे में एक अस्पष्ट कथन बनाने का प्रयास, मैं तुमसे सच कहता हूँ आज ही भविष्य में किसी अज्ञात समय पर, तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे, काम मत करो।

जैसा कि हॉवर्ड मार्शल ने लूका के सुसमाचार पर अपनी विद्वत्तापूर्ण टिप्पणी में दिखाया है, शायद न्यू इंटरनेशनल ग्रीक टेस्टामेंट कमेंट्री श्रृंखला में। मेरा मानना है कि यह सही है। और दूसरा अंश मनुष्य के पुत्र द्वारा एक विश्वासयोग्य गवाह की स्वीकृति है, प्रेरितों के काम 7:55 और 56।

बेशक, वफादार गवाह डीकन स्टीफन है। सुनने वाले क्रोधित हो जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन समय के इस्राएली भविष्यवक्ताओं पर क्रोधित होते थे। लोगों के प्रति यिर्मयाह की प्रतिक्रिया पर गौर करें। और प्रेरितों के काम 7:54, वे उस पर दाँत पीसते हैं।

लेकिन उसने पवित्र आत्मा का अनुसरण किया, अधिनियम 7:55, स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर के पुत्र, परमेश्वर की महिमा और यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ पर खड़ा देखा। और उस ने कहा, देख, मैं आकाश को खुला हुआ और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ। परन्तु उन्होंने ऊँचे शब्द से चिल्लाकर उसे पत्थरवाह करके मार डाला।

बाख, अन्य लोगों के बीच, यीशु को अपनी उपस्थिति में अपने शहीद का स्वागत करने के लिए खुली बांहों से खड़े होते हुए देखते हैं। इसलिए, लूक मृत्यु को स्वर्ग में संक्रमण के रूप में चित्रित करता है। क्रूस पर पश्चाताप करने वाला चोर, लूका 22:42, 43।

या मनुष्य के पुत्र द्वारा एक वफादार गवाह की स्वीकृति के रूप में, प्रेरितों के काम 7:55, 56, स्वीकृति का संकेत व्याख्या है। और मैं मनुष्य के पुत्र से सहमत हूँ, स्टीफन द्वारा मनुष्य के पुत्र की तस्वीर से, यीशु उसका स्वागत करने के लिए खड़े हैं। इस प्रकार, पूर्णता के बिना एक वर्तमान अंतरिम अवधि का मुद्दा कुछ हद तक उन लोगों के लिए मध्यवर्ती वास्तविकता की उपस्थिति से नरम हो जाता है जो उसकी वापसी से पहले गुजर जाते हैं।

मुझे यह बताना चाहिए कि जोएल ग्रीन, जिनके काम की मैं बहुत प्रशंसा करता हूँ और जिनसे मैंने बहुत कुछ सीखा है, आज मध्यवर्ती अवस्था की वास्तविकता को नकारने के प्रयासों का नेतृत्व करने वालों में से हैं। मैं अपने भाई का सम्मान करता हूँ और उनकी सराहना करता हूँ, लेकिन मैं चर्च के इतिहास और उसके पंथों और स्वीकारोक्ति के साथ खड़ा हूँ और डेरेल बॉक के साथ पुष्टि करता हूँ, और न केवल वे दो अंश, बल्कि पॉलिन के अंश भी, फिलिप्पियों 1, 2 कुरिन्थियों 5 में, शाश्वत मध्यवर्ती अवस्था की वास्तविकता के साथ-साथ शाश्वत की वास्तविकता को भी ध्यान में रखते हैं। इन सब में, भविष्य वर्तमान को परिप्रेक्ष्य देने में मदद करता है, विशेष रूप से पीड़ित होने की तत्परता के बारे में परिप्रेक्ष्य।

मैं बाख के शब्दों का स्वागत करता हूँ। अगर एक प्रगतिशील डिस्पेंसेशनलिस्ट एस्कैटोलॉजी के साथ ऐसा करता है, तो इसे सामने लाएँ। यह बहुत शिक्षाप्रद है।

बाइबल में निश्चित रूप से उसकी नाक, हाथ और दिल है, जो कि वहीं है जहाँ उसे होना चाहिए। ये चीजें होनी चाहिए। "आनन्द और प्रशंसा" एक और शीर्षक है।

लूका के सुसमाचार में खुशी के स्वर गूंजते हैं। वे परमेश्वर की योजना से संबंधित हैं, लूका 1:14। स्वर्गदूत गेब्रियल बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना से कहता है, पिता जकर्याह, परन्तु तुम्हें आनन्द और प्रसन्नता होगी, और बहुत से लोग उसके जन्म पर आनन्दित होंगे।

यह जॉन बैपटिस्ट का जन्म है। जकर्याह को इस बात पर यकीन करने में थोड़ा समय लगा, लेकिन वह वाकई खुश था। और जब उसने बच्चे का जिक्र करते हुए कहा कि उसका नाम जॉन है, तो वह बोल नहीं पा रहा था, जो एक आश्चर्य की बात थी क्योंकि यह उस परिवार में एक नया नाम था।

यह वह नाम था जिसे देने के लिए परमेश्वर ने उसे कहा था। लूका 2:10 भी इसी समय, यीशु के जन्म के बारे में खुशी की बात करता है। स्वर्गदूत ने चरवाहों से कहा, डरो मत, क्योंकि देखो, मैं तुम्हारे लिए बहुत खुशी की खुशखबरी लेकर आया हूँ जो सभी लोगों के लिए होगी।

उन्होंने संभवतः उन शब्दों को सभी यहूदी लोगों के लिए समझा। क्या परमेश्वर के मन में इससे भी बड़ी बातें थीं? यहाँ तक कि अन्यजातियों के लिए भी गवाही, मुझे आश्चर्य नहीं होगा, क्योंकि आज तुम्हारे लिए दाऊद के शहर में एक उद्धारकर्ता पैदा हुआ है, जो मसीह प्रभु है। लूका में भी आनन्द है, लूका का सुसमाचार भी वचन से जुड़ा हुआ है।

8:13. जो चट्टान पर हैं, (यही मिट्टी का दृष्टान्त है), वे हैं जो वचन सुनकर आनन्द से ग्रहण करते हैं। परन्तु जब यह बात प्रगट होगी, तो उनका अन्त अच्छा नहीं होगा।

वे इसे खुशी से ग्रहण करते हैं, लेकिन वे सच्चे शिष्य नहीं हैं। और यह वचन के इन चार ग्रहणों में स्पष्ट है। केवल चौथा ही सच्चा विश्वास दिखाता है क्योंकि केवल उसी के पास फल रहता है।

लेकिन फिर भी, यह शब्द लूका 8:13 में आनन्द से जुड़ा है। लूका 10:17 में आनन्द मिशन से जुड़ा है। 72 लोग आनन्द से लौटे और कहा, हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्माएँ भी हमारे वश में हैं।

यह जरूर कुछ बात रही होगी। उन्होंने खुद को आश्चर्यचकित किया। नहीं, यीशु ने उन्हें आश्चर्यचकित किया।

वे राक्षसों से ज़्यादा ताकतवर या उनसे ज़्यादा चतुर नहीं थे। लेकिन भगवान का बेटा दोनों ही था। यह बात मुझे हंसाती है।

और उसने उन्हें अपने नाम में दुष्टात्माओं पर अधिकार में आनन्द दिया, यही कुंजी है। खोई हुई चीजों और लोगों को खोजने पर स्वर्ग की प्रतिक्रिया में आनन्द है। खोई हुई भेड़, लूका 15:7। बेहतर होगा कि मैं जाँच करूँ और अपनी याददाश्त पर भरोसा न करूँ।

यह सही है। खोया हुआ सिक्का, 15:10. यह खोए हुए पुत्र के उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत में स्वर्ग में खुशी का सटीक उल्लेख नहीं करता है।

निश्चित रूप से यह पार्टी के चल रहे हिस्से से जुड़ा हुआ है। लेकिन ल्यूक के सुसमाचार में बहुत आनंद है। यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण में भी खुशी है।

ल्यूक 24. बाख ने कितनी बार इसका उल्लेख किया है? श्लोक 41 में, यीशु ने शिष्यों को पुनर्जीवित ईसा मसीह को प्रकट होते हुए दिखाया और उन्हें कलंक के साथ अपने हाथ और पैर दिखाए। और जबकि वे अभी भी अविश्वास करते थे, मुझे पवित्र ग्रंथ की ईमानदारी, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा, उसकी स्पष्टवादिता पसंद है, जबकि वे अभी भी खुशी के लिए अविश्वास करते थे।

और हम आश्चर्यचकित हैं, उसने उनसे पूछा, क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है? और उसने उन्हें यह दिखाने के लिए कुछ मछलियाँ खाईं कि वह कोई प्रेत नहीं था, बल्कि वह परमेश्वर का जी उठा हुआ पुत्र था। सुसमाचार की आशा परमेश्वर के प्रति एक बुनियादी खुशी और स्तुति को बढ़ावा देती है। शिष्यत्व में बाधाएँ परमेश्वर के नए लोगों के अंतर्गत अंतिम शीर्षक है।

लूका में पैसे की भूमिका पर बहुत चर्चा की गई है। नकारात्मक चेतावनियाँ और दृष्टांत बहुत हैं। पैसा ईश्वर की ओर से एक उपहार है, लेकिन यह खतरनाक है।

लूका 8:14, लूका 12:13 से 21. लूका 16:1 से 15. और पद 19 से 31. लूका 18:18 से 25. लेकिन तीसरे सुसमाचार में भी सकारात्मक उदाहरण मौजूद हैं. लूका 8:1 से 3. लूका 19:1 से 10. जक्कई. लूका 21:1 से 4. प्रेरितों के काम 4:36 और 37. इस बात पर विशेष रूप से बहस होती है कि क्या लूका ने धन की निंदा की है.

जक्कई का उदाहरण, जिसने उदारता से अपने धन के दुरुपयोग का बदला चुकाया, लेकिन अपनी सारी संपत्ति को मुश्किल से ही बेचा, यह बताता है कि मुद्दा यह नहीं है कि किसी के पास क्या है, बल्कि यह है कि उसके पास जो है, उसका क्या उपयोग किया जाता है। कहा जाता है कि शिष्यों ने यीशु के लिए सब कुछ छोड़ दिया। लूका 18:28 से 30.

एक टिप्पणी जो संसाधनों से परे परिवार को छोड़ने तक भी जाती है। फिर भी बाद में सुसमाचार में, वे विफलता प्रदर्शित करते हैं जब यीशु की गिरफ्तारी का दबाव इनकार पैदा करता है। संसाधनों के साथ मुद्दा, परिवार और लोगों से डरने के साथ, किसी की प्रतिक्रिया की पूर्णता या किसी के आखिरी सिक्के तक शाब्दिक अनुसरण नहीं है, बल्कि एक मौलिक अभिविन्यास है।

यह मान्यता कि किसी का सारा जीवन ईश्वर का है और उसके हाथ से आता है। धनी व्यक्ति ने यीशु के सब कुछ बेचने के अनुरोध पर भी विचार नहीं किया, जबकि शिष्य और जक्कई इस प्रक्रिया में शामिल हो चुके थे। संक्षेप में, लूका चेतावनी देता है कि शिष्यत्व में बाधाओं में न केवल संसाधन शामिल हैं, बल्कि लोगों से डरना भी शामिल है।

लूका 12:1 से 12. और जीवन की चिन्ताओं के विषय में चिन्ता करना। लूका 8:14.

समापन, ल्यूक के विचार के लिए बॉक का उपयोगी परिचय। सारांश। ल्यूक का सुसमाचार देहाती, धार्मिक और ऐतिहासिक है।

ईश्वर की योजना की वास्तविकता इस बात पर प्रभाव डालती है कि व्यक्ति स्वयं को और जिस समुदाय से वे जुड़े हैं उसे कैसे देखते हैं। जाति की पुरानी बाधाएँ दूर हो जाती हैं। नई आशा भरपूर है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि यीशु का संदेश आशा और परिवर्तन का है। कोई भी, यहूदी या अन्यजाति, इसका सदस्य हो सकता है। केंद्र में यीशु, वादा किया गया मसीहा भगवान है, जो ऊपर से अधिकार का प्रयोग करते हुए, भगवान के दाहिने हाथ पर बैठता है।

वह एक दिन वापस आएगा, और सभी लोग उसके प्रति जवाबदेह होंगे। उनका जीवन, मंत्रालय, पुनरुत्थान और आरोहण दर्शाता है कि उनमें भरोसा करने की क्षमता है। वह परमेश्वर के वादों को पूरा कर सकता है, जैसे उसने उनका उद्घाटन किया है।

इस बीच, एक शिष्य बनना आसान नहीं है, लेकिन यह समृद्ध आशीर्वाद से भरा है जो इस जीवन में दी जा सकने वाली किसी भी चीज़ से कहीं अधिक है। यह मुक्ति के बारे में आश्वासन है जो ल्यूक थियोफिलस और उसके जैसे अन्य लोगों को प्रदान करता है। अपने अगले व्याख्यान में, हम ल्यूक के सुसमाचार के संबंध में जोएल ग्रीन के कुछ बहुत ही उपयोगी और शिक्षाप्रद विचारों पर नज़र डालेंगे।

यह ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं। यह सत्र 6 है, डैरेल बॉक का धर्मशास्त्र, द न्यू कम्युनिटी।